यादें / मेरी डायरी

एक योद्धा का सफरनामा

गीतांजलि सक्सेना

पत्रकारिता जगत का जाना पहचाना चेहरा, एक योद्धा श्री अविनाश चंद्र सक्सेना कोविड काल में जिन्दगी की जंग हार गये। अपने पत्रकार सहकर्मी के बीच (ए सी) के नाम से जाने जाते थे। दरअसल, उनकी पत्रकारिता का सफर अनेकों उतार-चढ़ाव, संघर्षों और चुनौतियों से भरा रहा। हर बार बस पत्रकार बनने की चाहत और इस क्षेत्र में कार्य करने की अभिलाषा ही उन्हें प्रेरित करती रही और इस रास्ते की ओर नयी दिशा निर्देश के तहत वह हमेशा आगे बढ़ते रहे।

लेखन का शौक उन्हें अपनी यूनिवर्सिटी के जमाने से ही था। उस दौरान कॉलेज की मैग्जीन में भी लिखते रहे। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से भूगोल में स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के तुरंत बाद उन्हें जौनपुर के तिलकधारी कॉलेज के भूगोल विभाग प्रमुख का कार्यभार सम्भालने का अवसर मिला। किन्तु इस पद के दायित्व को निभाने में उन्हें कुछ खास खुशी नहीं मिली और उनकी लिखने की ललक पुनः इलाहाबाद की ओर ले आयी। उत्तर प्रदेश शिक्षा विभाग की मैग्जीन के सम्पादकीय विभाग के कार्यों में जुटे रहे। इसी दौरान अपनी माता की इच्छा पूरी करने के लिए आईएएस की तैयारी की पढ़ाई भी करते रहे। प्रवेश परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने के बाद मां का सपना पूरा ना होने पर निराश तो जरूर हुए, पर पीछे मुड़कर कभी नहीं देखा।

अति मेहनती, बुद्धिमान और किताबें पढ़ने का शौक उनकी जीवनशैली का अमूल्य हिस्सा हमेशा से रहा। कॉलेज जमाने में भी वह टाइम मैग्जीन को पढ़ते थे, और वही उनकी पसंदीदा किताबों में रही। कुछ ही समय बाद फिर पत्रकार बनने की जद्दोजहद में लग गये। उनका कलम और दवात से लगाव के कारण ही उन्हें हमेशा ऊर्जा मिलती रही। थोड़े अंतराल के बाद उन्होंने नियमित नौकरी इलाहाबाद से प्रकाशित होने वाला दैनिक पेपर द लीडर में रिपोर्टर की हैसियत से अपने सफर की शुरुआत की। उनके काम की निपुणता ने उन्हें इसी द लीडर पेपर ने राजधानी दिल्ली की शाखा का कार्यभार संभालने का मौका दिया। इस दौरान उनकी लेखन सहित प्रकाशन विभाग को बखूबी समझने और काम करने के अवसर ने उनके पत्रकारिता के सफर ने गति पकड़ ली।

दोस्तों के दोस्त थे। दोस्तों के साथ कॉफी होम में बैठना और गपशप करना उनके जीवनशैली और रुचि का अहम हिस्सा बन गया। उनके मित्रों का दायरा विस्तृत था। पत्रकारों सहित राजनयिकों या राजनेताओं के साथ अपना समय व्यतीत करते, जिनमें से बहुत तो उनके यूनिवर्सिटी के साथी हुआ करते, जिनके साथ उनका हमेशा संपर्क रहता था। बेहद सोशल। सबसे जुड़े रहने में उन्हें खुशी प्राप्त होती थी। बातचीत में हर विषय पर सटीक ज्ञान और जानकारी रखते थे। इस कारण मित्रों की बैठकों में बेहद लोकप्रिय भी रहे। बड़ी सहजता और सरलता से अपना परिप्रेक्ष्य रखने की कला उनमें थी। अपने सफर का उच्च मुकाम उन्हें राजधानी के इंडियन एक्सप्रेस पेपर में मिला। उसमें सब एडिटर के रूप में ज्वाइन किया और न्यूज एडिटर के पद से निर्धारित समय पर रिटायर हुए। उसके बाद भी अपने सफर को जारी रखते हुए कई मैग्जीनों के सम्पादन कार्यों से जुड़े रहे। इसी दौरान विदेशी न्यूज सर्विस व एजेन्सियों में भी अपना योगदान दिया। विदेश यात्रा का भी मौका मिला, किन्तु वहां की चकाचौंध से बिल्कुल प्रभावित नहीं हुए। अपने देश और शहर से लगाव इतना कि नई जगह देखने और घूमने में कोई खास रुचि नहीं रखते थे।

जिन्दगी के हर पड़ाव में उनके इस सफर में उनकी सहधर्मिणी का साथ व सहयोग एक मजबूत रिश्ते को प्रमाणित ही नहीं करता है, बल्कि परिवार के समक्ष एक अद्भुत उदाहरण के रूप में है और रहेगा। दोनों के बीच हर विषय पर चर्चा और फिर जब राजनीतिक विश्लेषण हो, तब का दृश्य दो गुटों या पार्टी में बँटते देखना, परिवार के अन्य सदस्यों को यह अनुभव बेहद रोचक व दिलचस्प होता था।

स्वतंत्र विचारधारा के साथ अपने परिवार के हर छोटे बड़े सदस्य का मार्गदर्शन हमेशा करते रहे। रूढ़िवादी परम्पराओं का सख्त विरोध करते थे। परिवार की बेटियों के पक्ष में खड़े रहते हुए उनकी उचित पढ़ाई व अच्छे स्वास्थ्य के लिए हमेशा मार्गनिर्देश बनाए। उनकी बेमिसाल जिंदादिली ... उनके स्वभाव की एक खूबी थी। दरअसल, यही स्वभाव उन्हें हर वर्ग में घुल-मिल जाने की पूर्ण स्वतंत्रता देता था। बेटे हो या नाती, पोते सब के साथ मिलकर रंग जमाना उनके व्यक्तित्व की खूबसूरती को दर्शाता ... नो जनरेशन गैप। दशकों से परिवार की हर पीढ़ी के सदस्यों के प्रेरणास्त्रोत बने रहे। उनके सफर के विराम से ...परिवार के लिए हुई है अभूतपूर्व हानि।

उनके मार्गदर्शन यादों में बसे रहेंगे, मार्गदर्शन हो गये दर्ज पन्नों में। परिवार की रहेगी अमूल्य पूंजी, मिली है हम सबको विरासत में।